कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (77) खण्ड - {153}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- जो अपनी देह की स्मृति सहित स्वाहा हो जाते हैं उनके -

A- श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन सहज होता है।

B- द्वारा विश्व परिवर्तन होगा।

C- सेन्स से वायुमण्डल बनता है।

D- संकल्पों में सिद्धि होती है।

प्रश्न 2- बुद्धि में यह रहे कि इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह सब ..... है ?

A- विनाश होना

B- रावण की प्रापर्टी

C- रावणराज्य

D- मिट्टी में मिल जाना है

प्रश्न 3- श्रेष्ठ कर्मों का फाउंडेशन है ?

A- श्रेष्ठ संकल्प

B- आत्मिक दृष्टि

C- पवित्रता

D- श्रेष्ठ संग

प्रश्न 4- विहंग मार्ग की सेवा करने के लिए संगठित रूप में किन दो बातों का बैलेंस चाहिए ?

A- ज्ञान और योग

B- रूप और बसंत

C- याद और सेवा

D- स्व कल्याण और विश्व कल्याण

प्रश्न 5- बच्चों को हमेशा यह ख्याल रखना है ?

A- आत्मा पावन कैसे बने

B- कर्मातीत बनने का

C- सभी को बाप का परिचय कैसे दें

D- माया जीत जगत जीत बनने का

प्रश्न 6- इस ईश्वरीय सेवा में बड़े से बड़ा पुण्य है ?

A- मनसा द्वारा शक्तियों का दान देना

B- हर आत्मा को बाप का पैगाम देना

C- सबको मुक्ति की राह दिखाना

D- पवित्रता का दान देना

प्रश्न 7- यहां तुम बच्चे -

A- बच्चे भी हो

B- स्टूडेन्ट भी हो

C- फालोअर्स भी हो

D- A और B

E- उपरोक्त सभी

प्रश्न 8- जो अपने धन्धे धोरी आदि में फँसे हुए बहुत रहते हैं, उनको कभी यह बुद्धि में आ न सके कि -

A- भगवान पढ़ाते हैं।

B- हम आत्मा हैं।

C- इस दुनिया का विनाश होना है।

D- सब मिट्टी में मिल जाना है।

प्रश्न 9- किस को बहुत बंधन रहता है ?

A- नौकरी करने वालों को

B- माताओं को

C- बांधेलियों को

D- व्यापारी लोगों को

प्रश्न 10- कौन है, वही हर बोल अर्थ सहित बोल सकता है ?

A- देही-अभिमानी

B- श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा

C- महान तपस्वी आत्मा

D- निश्चय बुद्धि आत्मा

प्रश्न 11- अमृतवेले अपने दूसरे सब संकल्पों को लॉकप (बंद) कर -

A- बिंदु बन बिंदु बाप को याद करो।

B- एक बाप को प्यार से याद करो, बाप से मीठी- मीठी रूहरिहान करो

C- देही-अभिमानी रहने का अभ्यास करो

D- पावरफुल वाइब्रेशन फैलाओ

प्रश्न 12- मनुष्यों को यह पता नहीं है कि भगवान को क्यों याद किया जाता है! हम भगवान को क्यों याद करते हैं ?

A- मुक्ति के लिये

B- पाप विनाश के लिए

C- मिलने के लिए

D- राजाई के लिए

प्रश्न 13- वहाँ स्वतः याद रहती है ?

A- जहां स्नेह है

B- जहां संबंध है

C- जहां प्राप्ति है

D- जहां परिचय है

प्रश्न 14- अभी तुम बच्चों को कौन सी उछल आनी चाहिए ?

A- गांव-गांव में जाकर सर्विस करें।

B- अपना सब कुछ सफल कर ले।

C- बाप समान बनने की।

D- सबको घर का रास्ता बतायें।

प्रश्न 15- कौन जीवनमुक्ति में आयेंगे ?

A- धारणा करेंगे वही

B- जो देवता बनने का पुरुषार्थ करते हैं

C- पढ़ाई पढ़ेंगे वही

D- जो संपूर्ण नष्टोमोहा बनेंगे

प्रश्न 16- जिसको..... की आदत पड़ी वह पतित बनने बिगर रह नहीं सकेंगे ?

A- बाइस्कोप

B- कुदृष्टि

C- देह-अभिमान

D- कुसंग

भाग (77) खण्ड {153} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *A.श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन सहज होता है*

सेन्स अर्थात् ज्ञान की प्वाइन्टस, समझ और इसेन्स अर्थात् सर्व शक्ति स्वरूप स्मृति और समर्थ स्वरूप। इन दोनों का बैलेन्स हो तो अपनापन वा पुरानापन स्वाहा हो जायेगा। हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म विश्व परिवर्तन की सेवा प्रति स्वाहा होने से विश्व परिवर्तक स्वत:बन जायेंगे। *जो अपनी देह की स्मृति सहित स्वाहा हो जाते हैं उनके श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन सहज होता है।*

उत्तर 2- *C.रावणराज्य*

अब बाप कहते हैं इस दु:खधाम को भूल जाओ। भल यहाँ रहते हो परन्तु बुद्धि में यह रहे कि *इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह सब रावणराज्य है।* इन शरीरों को देखते हैं, यह भी सारी पुरानी दुनिया की सामग्री है। यह सारी सामग्री इस यज्ञ में स्वाहा होनी है।

उत्तर 3- *C.पवित्रता*

श्रेष्ठ कर्मों का फाउन्डेशन है “पवित्रता"। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन मन्सा संकल्प में भी अगर कोई आत्मा के प्रति विशेष लगाव वा झुकाव हो गया, किसी आत्मा की विशेषता पर प्रभावित हो गये या उसके प्रति निगेटिव संकल्प चले, ऐसे बोल वा शब्द निकले जो मर्यादापूर्वक नहीं हैं तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे।

उत्तर 4- *B.रूप और बसंत*

बिहंग मार्ग की सेवा करने के लिए संगठित रूप में “रूप और बसन्त" इन दो बातों का बैलेन्स चाहिए। जैसे बसन्त रूप से एक समय पर अनेक आत्माओं को सन्देश देने का कार्य करते हो ऐसे ही रूप अर्थात् याद बल द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प के बल द्वारा बिहंग मार्ग की सर्विस करो।

उत्तर 5- *D.मायाजीत जगतजीत बनने का*

रूसतम से माया भी अच्छी रीति रूसतम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी! *बच्चों को हमेशा यह ख्याल रखना है, हमको मायाजीत जगतजीत बनना है।* माया जीते जगत जीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं। अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है - तुम कैसे माया पर जीत पा सकते हो।

उत्तर 6- *D.पवित्रता का दान देना*

इस ईश्वरीय सेवा में बड़े-से-बड़ा पुण्य है - पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। किसका दु:ख लेकर सुख देना, यही सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य का काम है। ऐसे पुण्य करते-करते पुण्यात्मा बन जायेंगे।

उत्तर 7- *E.उपरोक्त सभी*

सारे सृष्टि चक्र वा ड्रामा में बाप एक ही बार आते हैं। और कोई सतसंग आदि में ऐसे नहीं समझते होंगे। न वह कथा करने वाला बाप है, न वह बच्चे हैं। वह तो वास्तव में फालोअर्स भी नहीं हैं। *यहाँ तो तुम बच्चे भी हो, स्टूडेन्ट भी हो और फालोअर्स भी हो।*

उत्तर 8- *A.भगवान पढ़ाते हैं*

यह स्टूडेन्ट लाइफ भी एक ही बार होती है, जबकि भगवान आकर पढ़ाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में यह है, बाकी *जो अपने धन्धे धोरी आदि में फँसे हुए बहुत रहते हैं, उनको कभी यह बुद्धि में आ न सके कि भगवान पढ़ाते हैं। * उन्हें तो अपना धन्धा आदि ही याद रहता है।

उत्तर 9- *D.व्यापारी लोगों को*

रोजाना टाइम मुकरर कर दो अपना चार्ट लिखने का। *व्यापारी लोगों को बहुत बंधन रहता है।* नौकरी

करने वालों पर बंधन नहीं रहता। वह तो अपना काम पूरा किया खलास। व्यापारियों के पास तो कभी ग्राहक आये तो सप्लाई करना पड़े। बुद्धियोग बाहर चला जाता है।

उत्तर 10- *A.देही-अभिमानी*

जो देही-अभिमानी है, वही हर बोल अर्थ सहित बोल सकता है। बाप तुम्हें संगम पर जो भी सिखलाते हैं, वह अर्थ सहित है। देह-अभिमान में आकर मनुष्य जो कुछ बोलते हैं वह सब अर्थ के बिना अनर्थ है। उससे कोई फल नहीं निकलता, फायदा नहीं होता।

उत्तर 11- *B.एक बाप को प्यार से याद करो,बाप से मीठी-मीठी रूहरिहान करो*

मीठे बच्चे - *अमृतवेले अपने दूसरे सब संकल्पों को लॉकप (बंद) कर एक बाप को प्यार से याद करो, बाप से मीठी-मीठी रूहरिहान करो*

उत्तर 12- *B.पाप विनाश के लिए*

मनुष्यों को यह पता नहीं है कि भगवान को क्यों याद किया जाता है! कहते भी हैं तुम मात-पिता. . . . अर्थ नहीं जानते। अभी तुम जानते हो, शिव के चित्र पर समझा सकते हो - यह ज्ञान का सागर, पतित-पावन है, उनको याद करना है। *जितना-जितना बाप की याद में रहेंगे, याद के बल से पाप मिट जायेंगे।*

उत्तर 13- *C.जहां प्राप्ति है*

विश्व कल्याण की जिम्मेवारी का ताज और बापदादा का दिलतख्त सदा कायम रहे तो निरन्तर स्वत:योगी बन जायेंगे। उन्हें किसी भी प्रकार की मेहनत करने की बात नहीं। क्योंकि एक तो संबंध समीप का है दूसरा प्राप्ति अखुट है। *जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ स्वत:याद होती है।*

उत्तर 14- *A.गांव-गांव में जाकर सर्विस करें*

तुम्हें उछल आनी चाहिए कि गांव-गांव में जाकर सर्विस करें। तुम्हारे पास जो कुछ है, वह सेवा अर्थ है। बाप बच्चों को राय देते हैं - बच्चे, इस पुरानी दुनिया से अपना पल्लव आज़ाद करो। कोई चीज़ में ममत्व नहीं रखो, इनसे दिल नही लगाओ।

उत्तर 15- *B.जो देवता बनने का पुरूषार्थ करते हैं*

जो देवता बनने का पुरुषार्थ करते हैं वही जीवनमुक्ति में आयेंगे। बाकी सभी मुक्ति में जायेंगे। हिसाब एक्यूरेट नहीं निकाल सकते। कोई तो रहेंगे भी। विनाश का साक्षात्कार करेंगे। यह सुहावना समय भी देखेंगे। हर बात में पुरुषार्थ करना होता है।

उत्तर 16- *A.बाइस्कोप*

तुम बच्चों को संग बड़ा अच्छा करना चाहिए। बुरे संग का रंग लगने से गिर पड़ेंगे। बाबा बाइसकोप (सिनेमा) आदि देखने की मना करते हैं। *जिसको

बाइसकोप की आदत पड़ी वह पतित बनने बिगर रह नहीं सकेंगे।* यहाँ हर एक की एक्टिविटी डर्टी है, नाम ही है वेश्यालय।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (77) खण्ड - {154}

प्रश्न 1- बाप समान क्या बन सर्विस करनी है ?

A- निर्माण

B- ओबिडिएन्ट

C- निर्हंकारी

D- विश्व कल्याणकारी

प्रश्न 2- मान,शान और किसका त्याग ही महान त्याग है ?

A- नाम

B- वैभव

C- साधन

D- स्थूल धन

प्रश्न 3- तुम्हारा मुख अभी स्वर्ग की तरफ है, तुम नर्क से किनारा कर स्वर्ग की तरफ जा रहे हो इसके लिए कौन सा चित्र है ?

A- गोले के

B- श्रीकृष्ण का

C- त्रिमूर्ति शिव

D- गेटवे टू हेवन

प्रश्न 4- कौन जैसे एकदम रसातल में चले जायेंगे ?

A- जो ब्राह्मण भी बने हैं फिर बुद्धि चली जाती है हेल तरफ।

B- देह अभिमानी।

C- श्रीमत पर न चलने वाले।

D- निर्विकारी नहीं रहते तो।

प्रश्न 5- कौनसी बड़ी लीला है ?

A- सभी आत्माओं को पावन बनाने की लीला

B- मनुष्य से देवता बनाने की लीला

C- सृष्टि के बदलने की लीला

D- बच्चों को त्रिनेत्री,त्रिकालदर्शी बनाने की लीला

प्रश्न 6- एक आत्माओं का झाड़ है, दूसरा है, मनुष्यों का झाड़ । मनुष्यों के झाड़ में ऊपर में कौन हैं ?

A- ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा

B- ब्रह्मा-विष्णु-शंकर

C- शिवबाबा

D- मम्मा-बाबा

प्रश्न 7- विश्व सेवाधारी अर्थात् -

A- आलराउण्ड सेवाधारी

B- सदा आत्मिक स्थिति में रहने वाले

C- बेहद की स्थिति में स्थित

D- सदा समर्थ संकल्प रचने वाले

प्रश्न 8- तुम्हें.....बन कर नयी दुनिया में आना है ?

A- क्षीर खंड

B- गुल गुल

C- संपूर्ण पावन

D- संपूर्ण निर्विकारी

प्रश्न 9- पुरुषोत्तम संगमयुग पर पुरूषार्थ करना है ?

A- कर्मातीत बनने का

B- पुरुषोत्तम बनने का

C- सबकुछ सफल करने का

D- नष्टोमोहा बनने का

प्रश्न 10- सर्विस की सफलता के लिए मुख्य गुण है ?

A- नम्रता

B- निर्माणता

C- संतुष्टता

D- सहनशीलता

प्रश्न 11- खुशी और पद का आधार है ?

A- पवित्रता

B- याद

C- पढ़ाई

D- याद और सेवा

प्रश्न 12- ज्ञान अर्थात् -

A- स्व आत्मा को जानना

B- स्व आत्मा के पिता को जानना

C- रचता और रचना को जानना

D- सृष्टि के आदि,मध्य, अंत को जानना

प्रश्न 13- पहले-पहले पूजा शिव की होती है। मन्दिर भी उनके बनते हैं क्योंकि -

A- सर्व आत्माओं सहित सारी सृष्टि को पावन कर देते हैं।

B- रचयिता हैं।

C- भारत की और सारी दुनिया के बच्चों की सर्विस करते हैं।

D- स्वर्ग स्थापन करते हैं।

प्रश्न 14- भल कितने भी विध्न आदि पड़ते हैं, माया के तूफान आते हैं, तो भी -

A- तुम बाप की याद में रहो

B- तुम महावीर बनो

C- पढ़ाई पर ध्यान दो

D- स्व स्थिति में स्थित रहो

प्रश्न 15- राजा विक्रम का संवत है ?

A- विकर्माजीत

B- विक्रमी

C- अति विकर्मी

D- विक्रमी और अति विक्रमी

प्रश्न 16- अमृतवेले मन बुद्धि बाप के हवाले कर तख्तनशीन बन जाओ तो-

A- भविष्य तख्तनशीन का अनुभव करेंगे।

B- मालिक बनो और अधिकार लो।

C- जो तकदीर की रेखा खिंचवाने चाहो खिंचवा लो।

D- बाप के सर्व खजाने अपने खजाने अनुभव होंगे।

भाग (77) खण्ड {154} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *B.ओबीडियन्ट*

बच्चे जानते हैं हम क्या थे, क्या पाप किये। अब हम यह देवता बनते हैं, यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है फिर यहाँ मकान आदि की क्या परवाह रखनी है। इस दुनिया का जो कुछ है वह भूलना है। *बाप समान ओबीडियन्ट बन सर्विस करनी है।* सबको बाप का परिचय देना है।

उत्तर 2- *C.साधन*

स्लोगन:- *मान, शान और साधनों का त्याग ही महान त्याग है।*

उत्तर 3- *B.श्रीकृष्ण का*

तुम्हारा मुख अभी स्वर्ग की तरफ है, तुम नर्क से किनारा कर स्वर्ग की तरफ जा रहे हो, इसलिए बुद्धि का योग नर्क से निकाल दो। यहाँ भी बहुत हैं जिनका पति, बच्चों आदि में मोह रहता है। अभी तुम बच्चे जानते हो स्वर्ग का गेट खुलता है। *कृष्ण के चित्र में बड़ा क्लीयर लिखा हुआ है। इस लड़ाई के बाद स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं।*

उत्तर 4- *A.जो ब्राह्मण भी बनें फिर बुद्धि चली जाती है हेल तरफ*

बाप कहते नर्क तरफ बुद्धियोग न रखो। परन्तु बाप का भी कहना मानते नहीं। फिर क्या करना पड़े? इसमें

बड़ी नष्टोमोहा स्थिति चाहिए। यह सारा ज्ञान आत्मा में है। बाप की आत्मा कहती है इनको हमने क्रियेट किया है, मेरा कहना नहीं मानते हैं। *कोई तो ब्राह्मण भी बने हैं फिर बुद्धि चली जाती है हेल तरफ। तो वह जैसे एकदम रसातल में चले जायेंगे।*

उत्तर 5- *C.सृष्टि के बदलने की लीला*

पिछाड़ी में गाते हैं ना - अहो प्रभू तेरी लीला। कौन-सी लीला? *सृष्टि के बदलने की लीला। यह है सबसे बड़ी लीला।* पुरानी दुनिया खत्म होने से पहले नई दुनिया की स्थापना होती है इसलिए हमेशा किसको भी समझाओ तो पहले स्थापना, विनाश फिर पालना कहना है।

उत्तर 6- *A.ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा*

एक आत्माओं का झाड़ है, दूसरा है मनुष्यों का झाड़। *मनुष्यों के झाड़ में ऊपर में कौन हैं? ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा को ही कहेंगे।* यह जानते हैं ब्रह्मा मुख्य है

परन्तु ब्रह्मा के पीछे क्या हिस्ट्री-जॉग्राफी है, यह कोई नहीं जानते।

उत्तर 7- *C.बेहद की स्थिति में स्थित*

विश्व सेवाधारी अर्थात् बेहद की स्थिति में स्थित रहने वाले। ऐसे सेवाधारी सेवा करते हुए भी न्यारे और सदा बाप के प्यारे रहते हैं। सेवा के लगाव में नहीं आते क्योंकि सेवा का लगाव भी सोने की जंजीर है।

उत्तर 8- *A.क्षीर खण्ड*

मीठे बच्चे - अभी ड्रामा का चक्र पूरा होता है, *तुम्हें क्षीरखण्ड बनकर नई दुनिया में आना है,* वहाँ सब क्षीरखण्ड हैं, यहाँ लूनपानी हैं।

उत्तर 9- *B.पुरुषोत्तम बनने का*

हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं, स्वयं भगवान हमें मनुष्य से देवता बनाने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं, इस नशे और खुशी में रहना है। *पुरुषोत्तम संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ करना है।*

उत्तर 10- *D.सहनशीलता*

सर्विस की सफलता के लिए मुख्य गुण है सहनशीलता का। हर बात में सहनशील बनकर आपस में संगठन बनाकर सर्विस करो। भाषण आदि के प्रोग्राम लेकर आओ। मनुष्यों को नींद से जगाने के लिए अनेक प्रबन्ध निकलेंगे। जो तकदीरवान बनने वाले हैं वह पढ़ाई भी रूची से पढ़ेंगे।

उत्तर 11- *C.पढ़ाई*

जब तक जीना है तब तक पढ़ना और पढ़ाना है, *खुशी और पद का आधार है पढ़ाई।* यह अन्दर बुद्धि में पढ़ाई गूँजती रहती है। जितना जो पढ़ेगा, उतनी उनको

खुशी भी रहेगी। अन्दर में यह रहता है कि हम नये विश्व का मालिक बनूँगा। अभी हम स्वर्ग द्वार जाते हैं।

उत्तर 12- *C.रचना और रचता को जानना*

वैसे तुम बच्चों की बुद्धि में गूँजना चाहिए - *रचता और रचना को जानना - यह है ज्ञान।* वह शान्ति के लिए, वह सुख के लिए। सुख होता है धन से। धन नहीं तो मनुष्य काम का नहीं। धन के लिए मनुष्य कितना पाप करते हैं। बाप ने अथाह धन दिया है। स्वर्ग सोने का, नर्क पत्थरों का।

उत्तर 13- *C.भारत की और सारी दुनिया के बच्चों की सर्विस करते हैं*

अभी तुम जानते हो ऊंच ते ऊंच शिवबाबा कौन है? उनकी पूजा क्यों की जाती है? अक आदि के फूल क्यों चढ़ाते हैं? वह तो निराकार है ना। कहते हैं नाम रूप से न्यारा है, परन्तु नाम रूप से न्यारी कोई चीज़ तो होती

नहीं। तब क्या है - जिसको फूल आदि चढ़ाते हैं? पहले-पहले पूजा उनकी होती है। मन्दिर भी उनके बनते हैं *क्योंकि भारत की और सारी दुनिया के बच्चों की सर्विस करते हैं।*

उत्तर 14- *A.तुम बाप की याद में रहो*

यह शरीर तो यहाँ 5 तत्वों का बना हुआ है। बनता है, छूटता है फिर बनता है। अब आत्मा तो अविनाशी है। अविनाशी आत्माओं को अब अविनाशी बाप पढ़ा रहे हैं संगमयुग पर। *भल कितने भी विघ्न आदि पड़ते हैं, माया के तूफान आते हैं, तुम बाप की याद में रहो।* तुम समझते हो हम ही सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हैं।

उत्तर 15- *B.विक्रमी*

जो भी बच्चे याद में रहते हैं, वो सदैव साथ में हैं। याद में रहने से साथ रहते हैं और विकर्म विनाश होते हैं फिर शुरू होता है विकर्माजीत संवत। *फिर जब रावण

राज्य होता है तब कहते हैं राजा विक्रम का संवत। वह विकर्माजीत, वह विक्रमी।*

उत्तर 16- *D.बाप के सर्व खजाने अपने खजाने अनुभव होंगे*

अमृतवेले वरदाता, भाग्य विधाता से जो तकदीर की रेखा खिंचवाने चाहो खिंचवा लो क्योंकि उस समय भोले भगवान के रूप में लवफुल हैं इसलिए मालिक बनो और अधिकार लो। खजाने पर कोई भी ताला-चाबी नहीं है। *मन बुद्धि बाप के हवाले कर तख्तनशीन बन जाओ तो बाप के सर्व खजाने अपने खजाने अनुभव होंगे।*